eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर प्रभाव

[1]डा0 मिहिर प्रताप
[2]रवि शेखर ठाकुर'
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, मनोविज्ञान, लक्ष्मी नरायन कॉलेज, भगवानपुर, वैशाली, बिहार
[2]शोधार्थी शिक्षा विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

मानव के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा एक अनिवार्य घटक है। शिक्षा प्रदाता अर्थात् शिक्षक समाज में अत्यंत उच्च स्थान रखता है। शिक्षक उन विद्यार्थियों को शिक्षा देता है जो देश के भावी नागरिक होंगे तथा राष्ट्र के उत्थान के भागीदार होंगे। कार्य संतुष्टि किसी भी शिक्षक के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। कर्तव्य के लिए समर्पित अर्थात शिक्षण के लिए समर्पित, शिक्षण उच्चकोटि की शिक्षा प्रदान करता है जिसका परिणाम विद्यार्थियों के बेहतर परीक्षा परिणाम एवं व्यक्तित्व निर्माण के रूप में सामने आता है। प्रस्तुत शोधपत्र शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभावों पर आधारित है। साथ ही इससे संबंधित विविध आयामों को प्रभावी बनाने हेतु सुझाव भी दिये गये हैं।

प्रमुख शब्द– शिक्षा, शिक्षक, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कार्य संतुष्टि।

Introduction

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो अच्छे आचरण के साथ सुखमय जीवन को जीना भी सिखाती है। जिसमें शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। इन भावी शिक्षकों को तैयार करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के शिक्षकों को पूर्व ज्ञान, शैक्षिक कौशल तथा शैक्षिक योग्यता प्रदान की जाती है। डॉ० सैयददेन ने शिक्षक की महत्ता को बताते हुए कहा है कि ''यदि आप किसी देश की जनता के सांस्कृतिक स्तर को मापना चाहते हैं तो इसका अच्छा तरीका यह है कि आप मालूम करें कि उस समाज में अध्यापक की सामाजिक स्थिति क्या है तथा उन्हें कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है।''

जॉन एडम्स के अनुसार, ''शिक्षक के मनुष्य का निर्माणकर्ता माना गया है। शिक्षक वह धुरी है जिसके चारों ओर पूर्ण शैक्षिक व्यवस्था घूमती है।''

शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का विकास है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी क्षमताओं का उचित प्रयोग कर सकता है। वह जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य निरंतर सीखता रहता है। सीखने की इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उसे अनुभव प्राप्त होता है। इन अनुभवों को व्यवहार में लाने का

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

कार्य शिक्षा करती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा करता है और शिक्षा सभ्यता के रूप में इस संसार की उन्नति करने में सहायता करती है। शिक्षा के मुख्य स्तर हैं–प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, उच्च व उच्चतर शिक्षा। इन सभी स्तरों का शिक्षा में विशेष स्थान है। बालक प्राथमिक स्तर पर आधारभूत ज्ञान प्राप्त करके उच्च प्राथमिक स्तर में प्रवेश करता है। उच्च प्राथमिक स्तर का स्थान प्राथमिक स्तर के समान ही महत्वपूर्ण है। यह स्तर बालक के शिक्षा की नींव है, इसके उपरांत ही शिक्षा रूपी दृढ़ स्थाई भवन का निर्माण हो पाता है।

शिक्षक समाज को नवीन दिशा प्रदर्शित करने में तत्पर रहता है। अतः शिक्षक के द्वारा ही एक स्वस्थ समाज की रचना होती है। कोठारी कमीशन (1964–66) के प्रतिवेदन में उल्लिखित है कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। देश के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में होता है। निःसंदेह जैसा शिक्षक होगा, वैसे ही उसके छात्र होंगे और उसी प्रकार का समाज बनेगा। यह आवश्यक है कि शिक्षा जनाकांक्षाओं एवं समाज की आवश्यकताओं से जुड़ सके और बच्चों में अपेक्षित दायित्व एवं मूल्यबोध विकसित कर सके। हमारे देश में शिक्षकों की नियुक्ति उनकी अकादमिक डिग्री, डिप्लोमा और सेवा पूर्व प्रशिक्षण के आधार पर की जाती है। साथ ही व्यावसायिक विकास हेतु समय–समय पर उन्हें प्रशिक्षण दिया जाता है, किंतु फिर भी इनमें से अधिकांश अपने कार्य में उद्देश्यहीन दिखाई देते हैं।

मानव समाज में शिक्षक का स्थान अत्यन्त उच्च है। किसी भी राष्ट्र के उत्थान व पतन का भार शिक्षक पर निर्भर करता है, क्योंकि शिक्षक जिन बच्चों को शिक्षा देता है, वे भावी नागरिक होते हैं। सम्पूर्ण समाज की उन्नति के लिए शिक्षकगण आदिकाल से ही प्रयत्न करते चले आ रहे है। जीवन के लक्ष्य एवं आदर्शो की प्राप्ति में उनका नेतृत्व मनुष्य को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाता रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक का सर्वोत्तम स्थान है। संस्थान के छोटे से छोटे काम से लेकर शिक्षण विधि के कारण–प्रकरण तक समस्त प्रक्रिया का संचालन शिक्षक के हाथ में ही रहता है। अतः राष्ट्र के विकास एवं शिक्षा दोनों को शिक्षक के गुण प्रभावित करते है। नई शिक्षा नीति–2020 में शिक्षक के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है कि किसी भी समाज में शिक्षक के दर्जे से उसकी सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि का पता लगता है। कहा जाता है कि कोई भी राष्ट्र अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठा सकता है। विश्व की प्रत्येक सभ्यता एवं संस्कृति में शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि मानी गयी है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यक शर्त दक्षतापूर्ण शिक्षण है, शिक्षक की दक्षता का प्रभाव सम्पूर्ण समाज के निर्माण में निर्णायक होता है। राष्ट्र निर्माण में गुणात्मक उच्च शिक्षा अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन करती है। अतएव उच्च शिक्षा में शिक्षण दक्षता के द्वारा ही गुणवत्ता के मानकों को संगठित किया जा सकता है। अतः राष्ट्रहित के सन्दर्भ में शैक्षिक गुणात्मक उन्नयन हेतु उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों की शिक्षण दक्षता की वर्तमान स्थिति का अवलोकन समीचीन होगा। शिक्षा अध्ययन विषय के साथ विकास की प्रक्रिया भी है। अध्ययन विषय तथा विकास की प्रक्रिया के क्षेत्र शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुदेशन क्रियाओं को समझना तथा कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त करना है परन्तु अभी भी शिक्षाशास्त्र के अन्तर्गत शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा दर्शन, शिक्षा समाजशास्त्र, शिक्षा का इतिहास तथा शिक्षा की

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

समस्याओं का अध्ययन एवं अध्यापन किया जा रहा है जिसका कक्षा शिक्षण में सीधा उपयोग नहीं है। प्रशिक्षण में विद्यार्थियों को शिक्षण तथा अनुदेशन का ज्ञान तथा बोध कराया जाये तथा अभ्यास का अवसर दिया जाए तभी प्रभावशाली शिक्षक तैयार किये जा सकते है। अध्यापन के प्रदर्शन को बेहतर और प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जाय इस सम्बन्ध में विश्वभर के शिक्षाविदों का यह मानना है कि मात्र पर्याप्त शिक्षक ही शिक्षा का समाधान नहीं है इससे भी अधिक महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण है कि शिक्षक शिक्षण कला में निपुण, कार्य कुशल, अच्छा ज्ञान एव उचित दृष्टिकोण हो। शिक्षक के कार्य कुशल बनाने के लिए एवं प्रभाविता के लिए व्यवस्थित रूप से दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम लागू करने का प्रावधान किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षक के कार्य संतुष्टि एवं उसके शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों पर प्रभाव के अध्ययन पर आधारित है तथा यह इससे संबंधित पहलुओं को समेटने का प्रयास करने के साथ ही सुझाव भी दिये गये हैं।

कार्य संतुष्टि

वर्तमान अध्ययन में कार्य संतुष्टि का अर्थ कार्य के प्रति व्यक्ति की रुचि, उससे होने वाली आय की पर्याप्तता, सहपाठियों से संबंध, भावी उन्नति के अवसर, सेवा सुरक्षा की भावना, कार्य की सामाजिक प्रतिष्ठा, कार्य के लिए प्रोत्साहन कार्य संतुष्टि का निर्धारण करता है। कार्य संतुष्टि दो शब्दों से मिलकर बना है, पहला है कार्य और दूसरा संतुष्टि। कार्य का अर्थ है–अपनाया गया कोई व्यवसाय, जिसके लिए कार्य किया जाए और संतुष्टि का अर्थ है–संतोष या प्रसन्नता। अर्थात् अपने कार्य व व्यवसाय से प्राप्त होने वाले आनंद व संतोष को कार्य संतुष्टि कहा जा सकता है।

किसी भी व्यवसाय के किन–किन पक्षों से संतुष्टि प्राप्त होती है, यह समझना अत्यंत आवश्यक है। कार्य कई प्रकार के होते हैं, कोई व्यवसाय करता है तो कोई अन्य सेवाएं देता है। सरकार द्वारा प्राप्त हुई जिम्मेदारी को सरकारी सेवा तथा निजी संस्था द्वारा प्राप्त हुई जिम्मेदारी को गैर सरकारी सेवा माना जाता है। इन्हीं सेवाओं के अंतर्गत कार्य की उस सीमा को मापने का प्रयास करना आवश्यक है जिससे संतुष्टि का स्तर ज्ञात हो सके। मुख्यतः इसके दो आधार होते हैं। एक– व्यक्ति को उसकी प्रकृति या स्वभाव व रुचि के अनुसार कार्य मिला हो तथा दूसरा– अपने व्यवसाय से कम से कम इतनी आर्थिक सुविधाएं व वेतन मिलता हो, जो उसे समाज में जीवनयापन के लिए आवश्यक है। कार्य संतुष्टि को आयु, अनुभव, लिंग, कार्य के समय, समय–सारणी, बुद्धि, क्षेत्र, शिक्षा, व्यक्तित्व व व्यक्तिगत क्षमताएं, आकांक्षा, मूल्य एवं आदर्श आदि घटक प्रभावित करते हैं।

शिक्षण प्रभावशीलता

शिक्षण प्रभावशीलता की अवधारणा शिक्षक के शिक्षण की प्रभावशीलता से सम्बन्धित है। अर्थात् एक शिक्षक अपने अध्यापन कार्य से अपने शिष्यों को किस प्रकार संतुष्ट कर पाता है। किसी भी शिक्षक की प्रभावशीलता का मापन उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त विद्यार्थी के संतुष्टि स्तर शिक्षार्थियों की सफलता का स्तर एवं विशिष्ट व शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर होते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

शिक्षक के शिक्षण प्रक्रिया निर्धारित मानक आवश्यक कौशल एवं आवश्यक पर्यावरण से समन्वित होकर जो शिक्षण उपलब्धियां प्राप्त होती है।

शिक्षक की भूमिका शैक्षिक पर्यावरण में अत्यंत प्रभावपूर्ण होता है। निश्चित समय, सामग्री, ऊर्जा, प्रयास व धन से वांछित परिणाम लाने हेतु एक शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षक के शिक्षण प्रभावशीलता के अंतर्गत कुशलतापूर्वक कार्य संपादन होना आवश्यक है। इसके अंतर्गत प्रशिक्षण की आवश्यकता व कार्य में अपेक्षित कौशल का विकास जरूरी है। शिक्षक का यही कौशल उसे अपने कार्य में पारंगत बनाता है अर्थात बिना किसी बाधा के वह शिक्षण कार्य को प्रभावशाली तरीके से निर्वहन करता है। शिक्षक जिस वातावरण में शिक्षण कार्य करता है, वहां उनके व्यवहार, संबंध सहयोग की भावना, स्नेह भाव आदि को प्रभावित करते हैं। यदि शिक्षक का वातावरण सकारात्मक है तो वह अच्छे भाव के साथ अपने कार्य को संपादित करने के लिए सकारात्मक विचार के साथ पूर्ण करने का प्रयास करता है।

शिक्षक, कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण में सम्बन्ध

प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने की पद्धति अलग–अलग होती है। साथ ही कार्य करने का ढंग, कार्य का उद्देश्य, कार्य के प्रति समर्पण जैसे अनेक बातें कार्य के परिणाम को प्रभावित करती हैं। कार्य से संतुष्ट एक शिक्षक ही प्रशिक्षणार्थियों अर्थात भावी शिक्षकों को पूर्ण ऊर्जा, उत्साह एवं समर्पिण के साथ शिक्षा प्रदान कर सकता है जिसके आधार पर यह माना जा सकता है कि कार्य संतुष्टि का शिक्षक के शिक्षण से सीधा सम्बन्ध है।

कार्य संतुष्ट एक शिक्षक सेवा, समर्पण, तन्मयता एवं राष्ट्र निर्माण की भावना के साथ शिक्षण कार्य करता है, जो कि विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन, शिक्षक पेशे के प्रति समर्पण, चरित्र निर्माण, भविष्य निर्माण, देश के प्रति समर्पण जैसी खूबियां विकसित करने में सहायक होगा और शिक्षक प्रशिक्षणार्थी इससे पूर्ण मनोयोग से प्रशिक्षण ग्रहण कर आदर्श शिक्षक बनने की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

निष्कर्ष

शिक्षक अपने बढ़ते हुए दायित्वों का निर्वाह तभी कर सकता है, जब उसमें उत्तम मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य, नैतिकता एवं चारित्रिक बल, अपने विषय का स्पष्ट ज्ञान, स्पष्ट जीवन दर्शन, शिक्षण कौशल में दक्षता, अध्ययनशील, प्रगतिशील, आत्मविश्वास और उत्साहपूर्ण आदि गुण हों।

इन महत्वपूर्ण गुणों के शिक्षक में संचालित करने के लिए उचि प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण सस्थानों का उच्च कोटि का होना नितान्त आवश्यक है। वर्तमान समय में शिक्षकों का स्तर निम्नकोटि का होता जा रहा है जबकि प्राचीन भारत में शिक्षकों को बहुत आदर की दृष्टि से देखा जाता था। इसका कारण है शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में व्याप्त दोष। शिक्षक प्रशिक्षण सस्थानों के सख्यात्मक विकास पर ही ध्यान दिया गया, गुणवत्ता सुधार की दिशा में नहीं। इसका परिणाम यह हुआ कि देश में शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की संख्या में तो वृद्धि हुई किन्तु प्रशिक्षण विधि अप्रभावी होकर रह गई है और प्रशिक्षण महाविद्यालय दोषपूर्ण हो गये है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

दोषपूर्ण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय एक अच्छे शिक्षक का निर्माण नही कर पायेंगे, क्योंकि शिक्षक का निर्माण उसी समय शुरू हो जाता है जबकि छात्र शिक्षक बनने के उद्देश्य से शिक्षक प्रशिक्षण संस्था मे प्रवेश लेता है। प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त किये हुए छात्र छात्रायें ही भावी शिक्षक होंगे। अतः शिक्षकों के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए यह आवश्यक है कि प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सर्वोत्तम गुणों से सम्पन्न शिक्षकों का चयन किया जाये। इसके अतिरिक्त शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवसायिक उपयोगिता भी कम है। शिक्षक प्रशिक्षण उपाधि प्राप्त करने के बाद नौकरी मिलने की कोई गारन्टी नहीं है। और यदि नौकरी मिल भी जाती है, तो यह आवश्यक नहीं हैं कि वह व्यक्ति उसी के योग्य हो।

उपर्युक्त दोषों के कारण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के द्वारा अच्छे शिक्षकों का निर्माण नहीं हो पा रहा है। हम सब शिक्षकों के महत्व अच्छी तरह से परिचित हैं। वह समाज को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। अतः शिक्षकों का सन्तुष्ट होना अति आवश्यक है। एक सन्तुष्ट एवं समायोजित शिक्षक ही अपनी पूरी ऊर्जा छात्रों के सर्वांगीण विकास मे लगा सकता है तथा उत्तम नागरिकों का निर्माण कर सकता है।

संदर्भ

- शर्मा, आर.ए. (2005), शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
- सिंह, अरुण कुमार (2006), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
- श्रीवास्तव, डी. एन. (2005), अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन, आगरा।
- पाठक, पी.डी. (1994), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- Indian Educational Abstracts; July 2003, 2004, 2006.
- Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language Dec-Jan 2018, Vol-5/25.
- International Research Journal of Management sociology & Humanities (Online) Vol-7, Issue-1 Year 2016.
- Buch, M.B. (1983-1988) : Fourth Survey of Research in Education, New Delhi Vol.-I, Vol. II, NCERT.
- Gupta, S.P. (1980). "A Study Of Job Satisfaction At Three Levels Of Teaching", Ph.D. Thesis, Meerut University.